एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-15

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -14 का शेष (नाटक का मूल पाठ)...]

वासवी : यह मैं क्या देख रही हूँ। छलना! यह गृह-विद्रोह की आग तू क्यों जलाना चाहती है? राज-परिवार में क्या सुख अपेक्षित नहीं है-

बच्चे बच्चों से खेलें, हो स्नेह बढ़ा उसके मन में,

Scanned by CamScanner

कुल-लक्ष्मी हो मुदित, भरा हो मंगल उसके जीवन में!

बन्धुवर्ग हों सम्मानित, हों सेवक सुखी, प्रणत अनुचर,

शान्तिपूर्ण हो स्वामी का मन, तो स्पृहणीय न हो क्यों घर?

छलना : यह सब जिन्हें खाने को नहीं मिलता, उन्हें चाहिए। जो प्रभु हैं, जिन्हें पर्याप्त है; उन्हें

Scanned by CamScanner

किसी की क्या चिन्ता-जो व्यर्थ अपनी आत्मा को दबावें।

वासवी : क्या तुम मेरा भी अपमान किया चाहती हो? पद्मा तो जैसी मेरी, वैसी ही तुम्हारी! उसे कहने का तुम्हें अधिकार है। किन्तु तुम तो मुझसे छोटी हो, शील और विनय का यह दुष्ट उदाहरण सिखाकर बच्चों की क्यों हानि कर रही हो?

छलना : (स्वगत) मैं छोटी हूँ, यह अभिमान तुम्हारा अभी गया नहीं। (प्रकट) छोटी हूँ, या बड़ी; किन्तु राजमाता हूँ। अजात को शिक्षा देने का मुझे अधिकार है। उसे राजा होना है। वह भिखमंगों का-

Scanned by CamScanner

जो अकर्मण्य होकर राज्य छोड़कर दरिद्र हो गए हैं-उपदेश नहीं ग्रहण करने पावेगा।

पद्मावती : माँ! अब चलो, यहाँ से चलो! नहीं तो मैं ही जाती हूँ।

वासवी : चलती हूँ, बेटी! किन्तु छलना-सावधान! यह असत्य गर्व मानव-समाज का बड़ा भारी शत्रु है।

पद्मावती और वासवी जाती हैं।

(शेष भाग-16 में ....)

Scanned by CamScanner